कर्म

प्रस्तुतकर्ता-

प्रकाश और पूजा छाबडा, इन्दौर

कर्म

जो अपनी आत्मा के असली स्वभाव को प्रकट न होने दे

कर्म

द्रव्य कर्म

आत्मा से सम्बद्ध कार्माण वर्गणा रुप पुद्गल स्कंध

भाव कर्म

मोह राग-द्वेष रुपी विकारी भाव

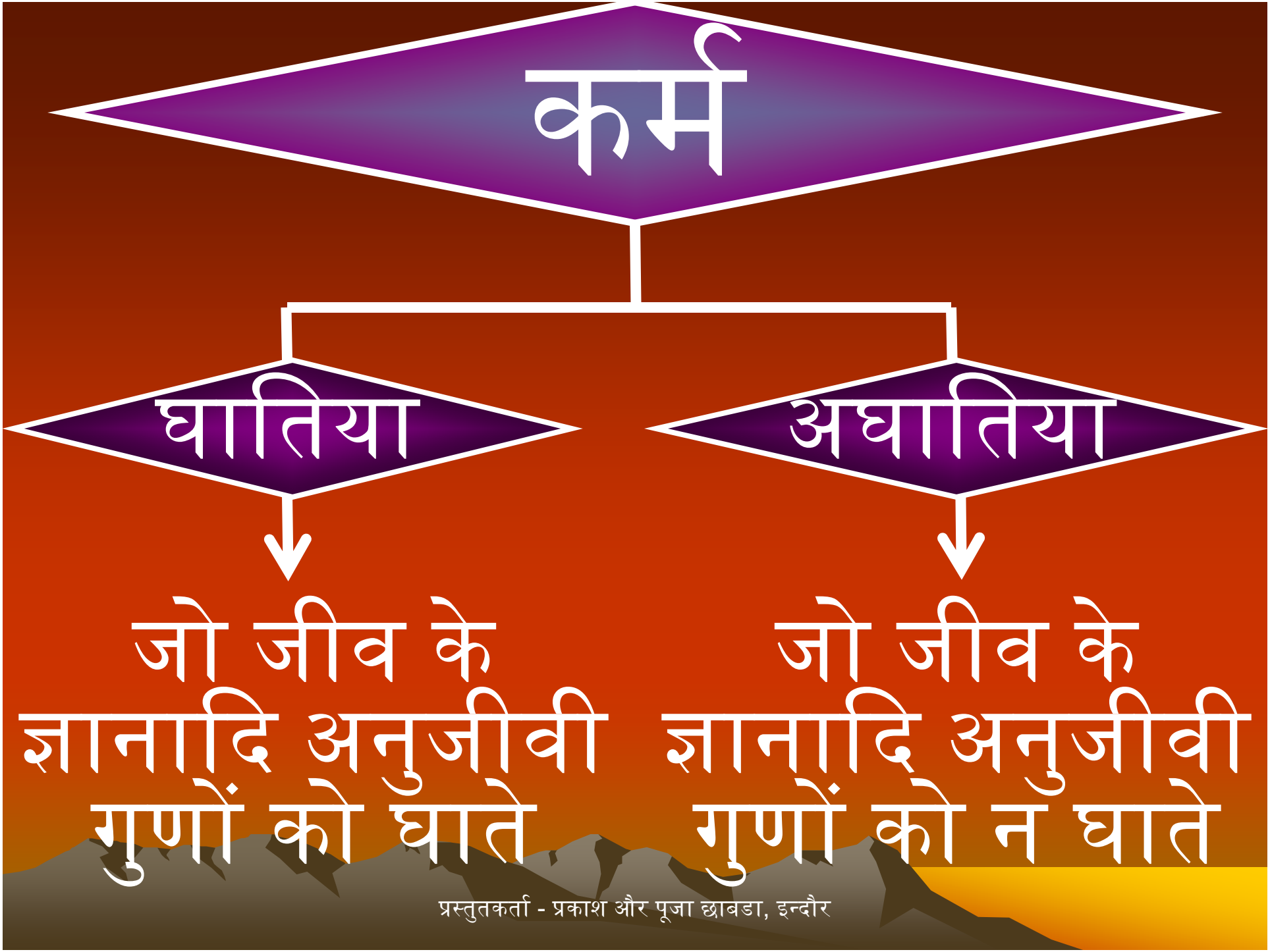

कर्म
घातिया
अघातिया
जो जीव के ज्ञानादि अनुजीवी गुणों को घाते
जो जीव के ज्ञानादि अनुजीवी गुणों को न घाते
प्रस्तुतकर्ता - प्रकाश और पूजा छाबडा, इन्दौर

घातिया

- ज्ञानावरणीय
- मोहनीय
- दर्शनावरणीय
- अंतराय

अघातिया

- वेदनीय
- आयु
- नाम
- गोत्र

ज्ञानावरण

जो आत्मा के ज्ञान गुण को घाते

प्रस्तुतकर्ता - प्रकाश और पूजा छाबडा, इन्दौर

ज्ञानावरण कर्म

- मतिज्ञानावरण
- श्रुतज्ञानावरण
- अवधिज्ञानावरण
- मन:पर्ययज्ञानावरण
- केवलज्ञानावरण

दर्शनावरण कर्म

जो आत्मा के दर्शन गुण को घाते

प्रस्तुतकर्ता - प्रकाश और पूजा छाबडा, इन्दौर

दर्शनावरण कर्म

- चक्षुदर्शनावरण
- अचक्षुदर्शनावरण
- अवधिदर्शनावरण
- केवलदर्शनावरण
- पाँच निद्राऐं

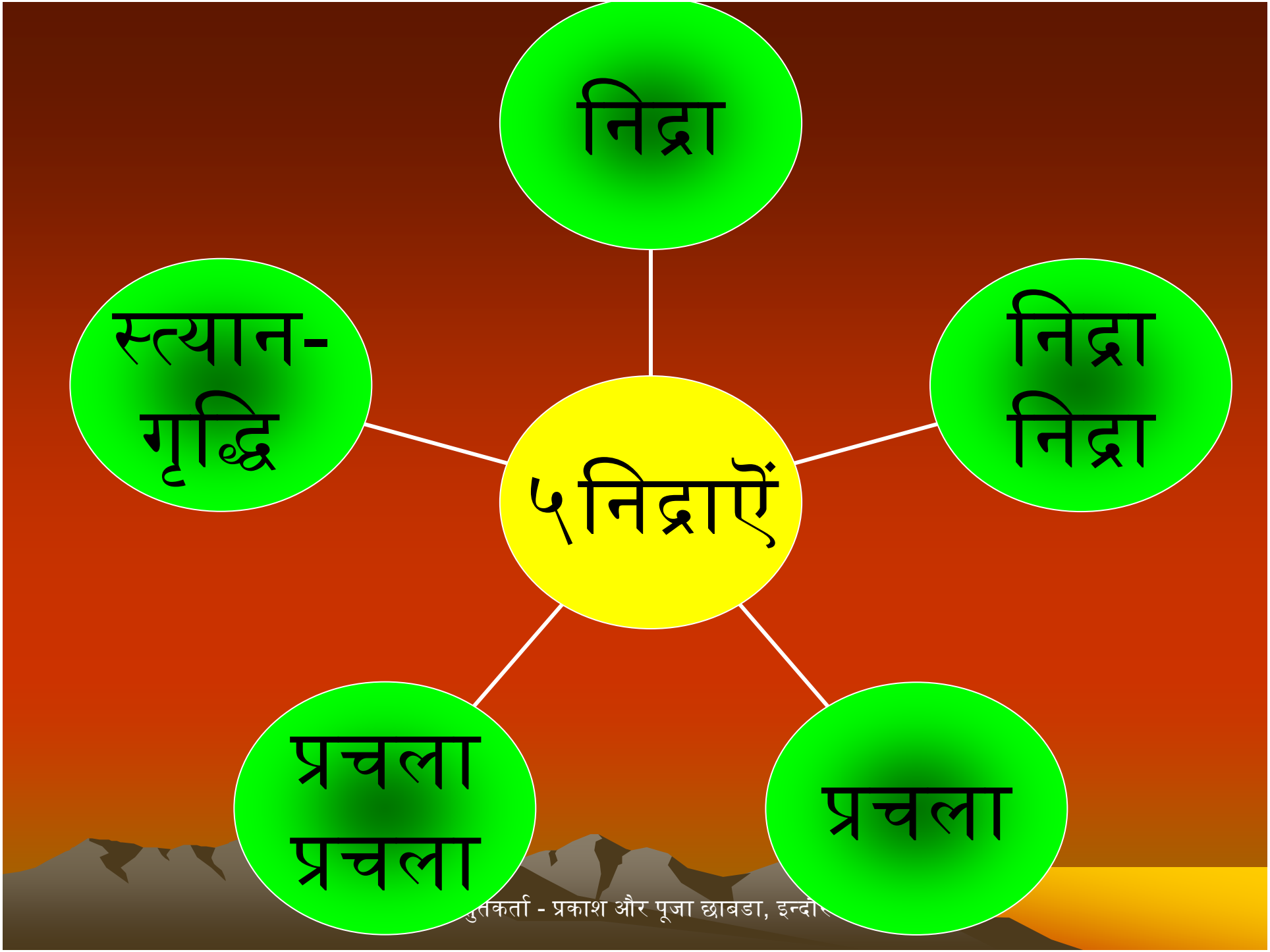
निद्रा
स्त्यान-
गृद्धि
निद्रा
निद्रा
५ निद्राऐं
प्रचला
प्रचला
प्रचला

निद्रा

- थकावट को दूर करने के लिए
- गमन करते हुए रुकना, बैठना, गिरना

निद्रा- निद्रा

- नींद पर नींद
- नेत्रों को न उघाड़ पाना

प्रचला

- शोक , श्रम,मद से उत्पन्न
- नेत्र कुछ उघाड़े हुए सोना, ऊँघना

प्रचला- प्रचला

- खड़े -2,बैठे-2, चलते-2, पुनः-2 नींद आए
- मुख से लार आना, हाथ पैर चलाना

स्त्यानगृद्धि

- वीर्य शक्ति विशेष होने से नींद में कठिन कार्य करना
- उठा हुआ भी सोना

मोहनीय

जो आत्मा के सम्यक्त्व और चारित्र गुण को घाते

प्रस्तुतकर्ता - प्रकाश और पूजा छाबडा, इन्दौर

मोहनीय कर्म

- दर्शन मोहनीय
- चारित्र मोहनीय

प्रस्तुतकर्ता - प्रकाश और पूजा छाबडा, इन्दौर

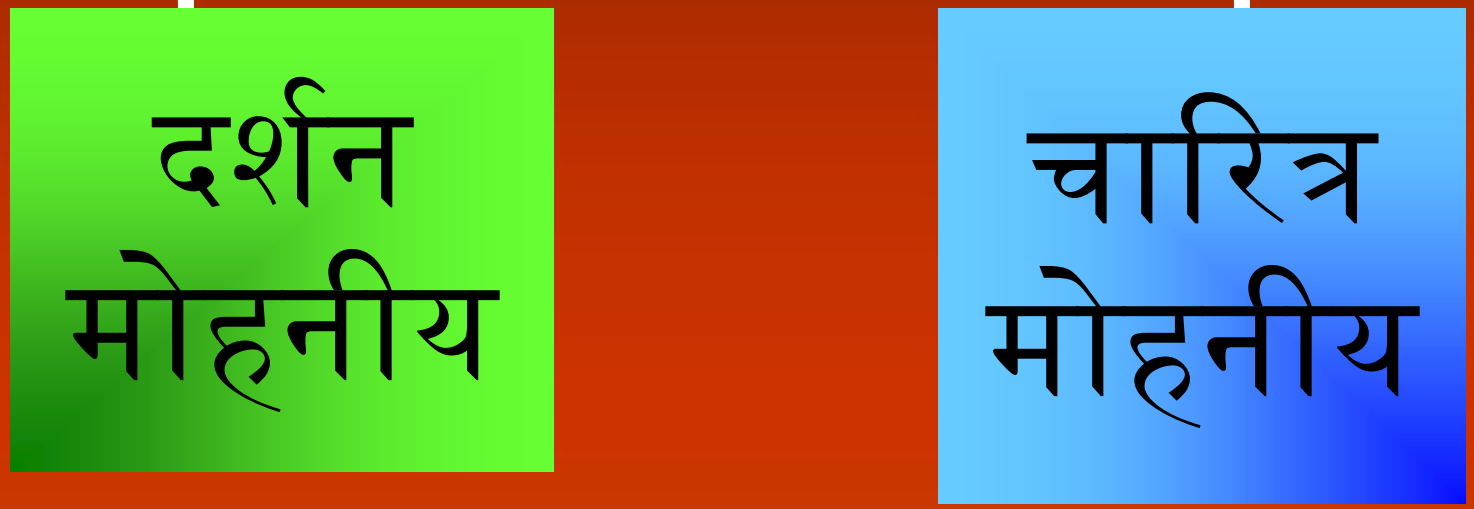

दर्शन मोहनीय

जो आत्मा के सम्यक्त्व गुण को घाते

प्रस्तुतकर्ता - प्रकाश और पूजा छाबडा, इन्दौर

दर्शन मोहनीय

मिथ्यात्व

सम्यक्त्व

सम्यक् मिथ्यात्व

चारित्र मोहनीय

जो आत्मा के चारित्र गुण को घाते

प्रस्तुतकर्ता - प्रकाश और पूजा छाबडा, इन्दौर

चारित्र मोहनीय

कषाय

नो कषाय

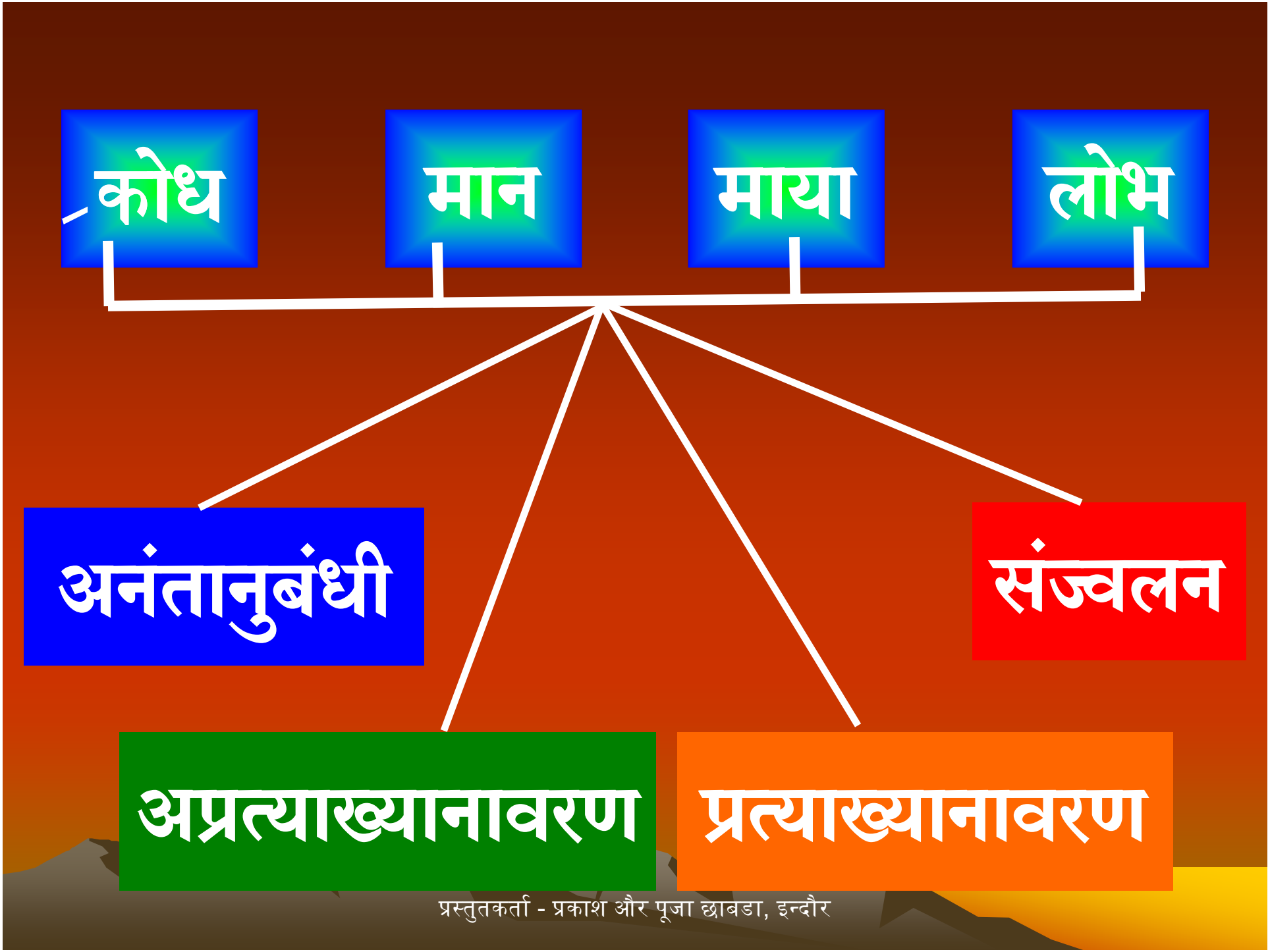
क्रोध
मान
माया
लोभ
अनंतानुबंधी
संज्वलन
अप्रत्याख्यानावरण
प्रत्याख्यानावरण

नोकषाय

- हास्य
- रति
- अरति
- शोक
- भय
- जुगुप्सा
- स्त्री वेद
- पुरुष वेद
- नपुसंक वेद

अंतराय

जो दानादिक में विघ्न डालें

प्रस्तुतकर्ता - प्रकाश और पूजा छाबडा, इन्दौर

अंतराय कर्म

- दान
- लाभ
- भोग
- उपभोग
- वीर्य

प्रस्तुतकर्ता - प्रकाश और पूजा छाबडा, इन्दौर

वेदनीय

जिस कर्म के फल से जीव को आकुलता हो

वेदनीय कर्म

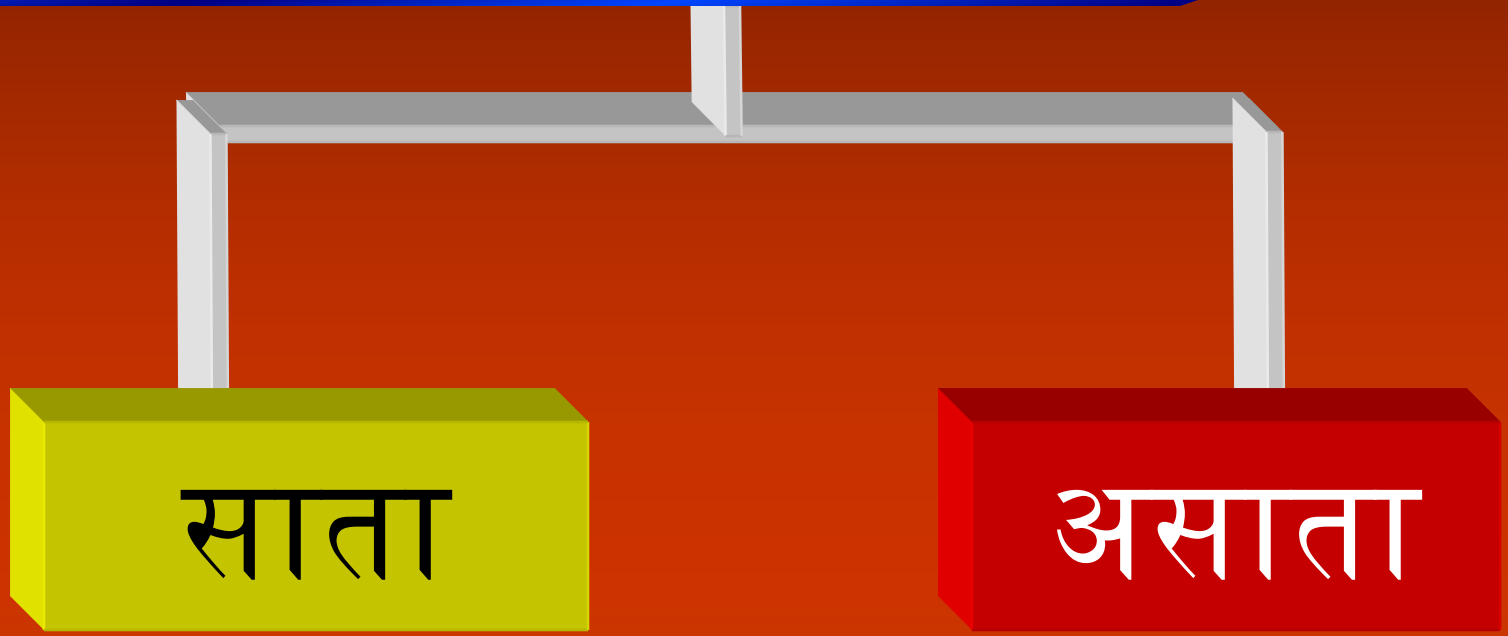

आयु

जो कर्म आत्मा को नारक, तिर्यंच, मनुष्य और देव के शरीर में रोके रखें

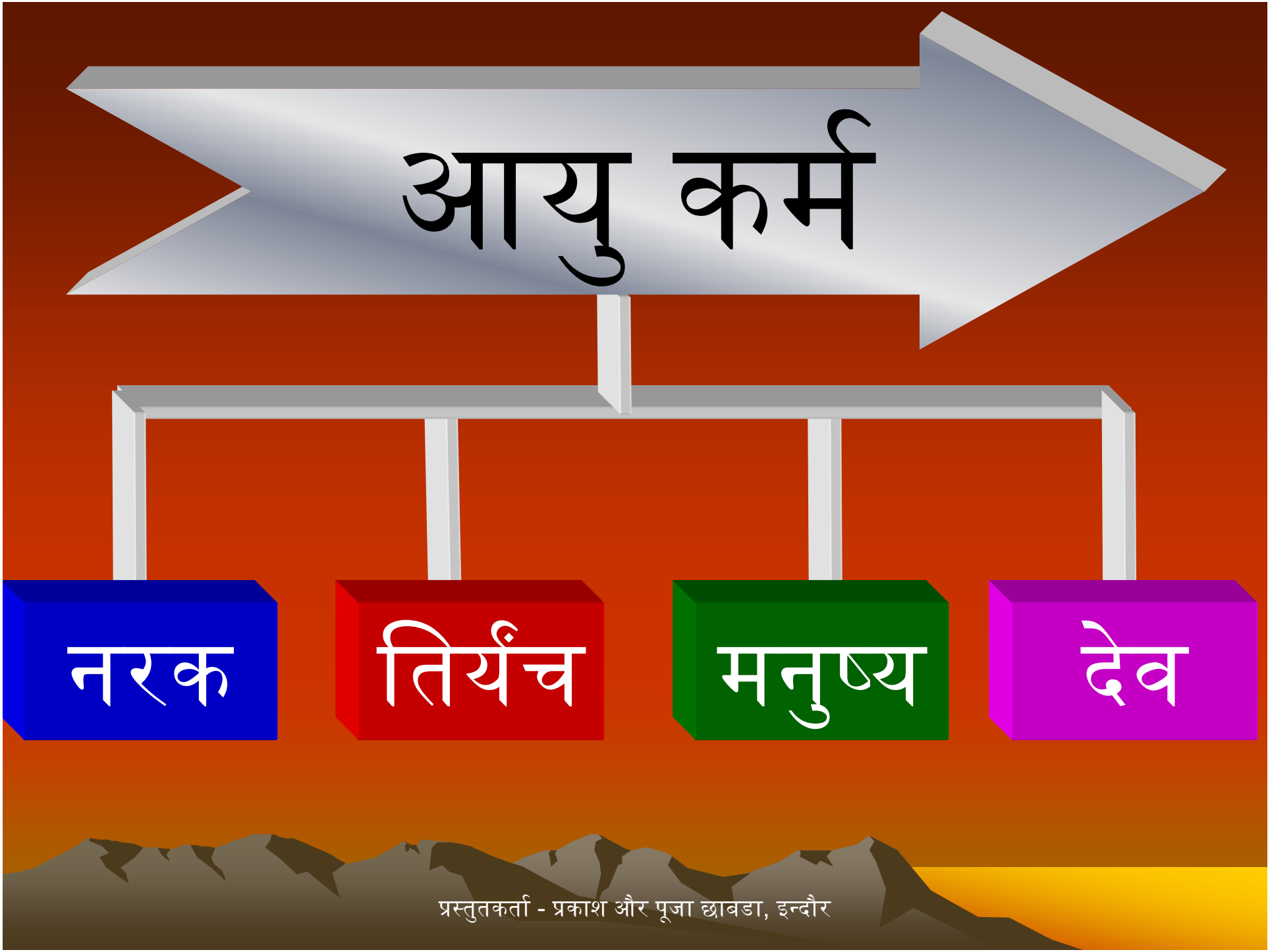
आयु कर्म
नरक
तिर्यंच
मनुष्य
देव

नाम

जो जीव को गति आदिक
नानारुप परिणमावें,
शरीरादिक बनावें

प्रस्तुतकर्ता - प्रकाश और पूजा छाबडा, इन्दौर

नाम कर्म

शुभ

अशुभ

नाम कर्म की कुल ९३ प्रकृतियाँ हैं

गोत्र

जो जीव को ऊँच नीच कुल मे उत्पन्न करावें

प्रस्तुतकर्ता - प्रकाश और पूजा छाबडा, इन्दौर

गोत्र कर्म

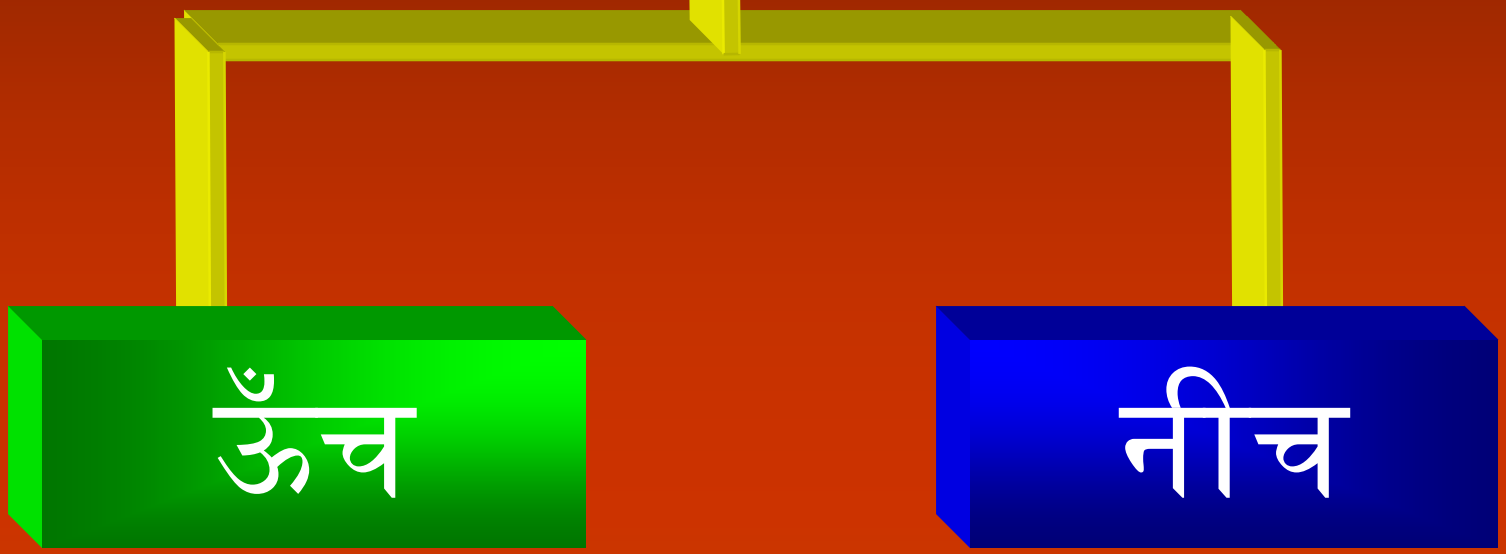

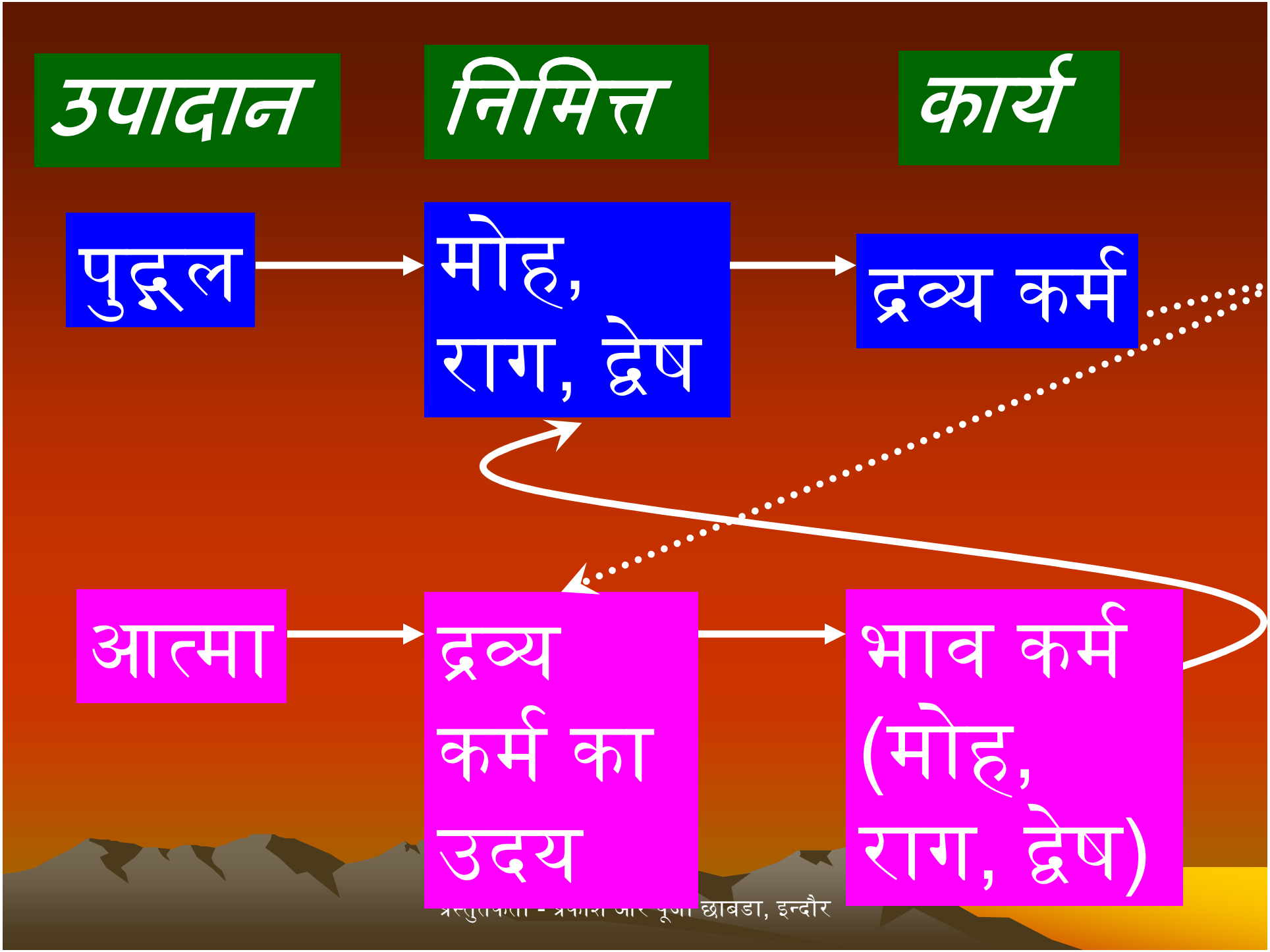
उपादान
निमित्त
कार्य
पुद्गल
मोह,
राग, द्वेष
द्रव्य कर्म
आत्मा
द्रव्य
कर्म का
उदय
भाव कर्म
(मोह,
राग, द्वेष)

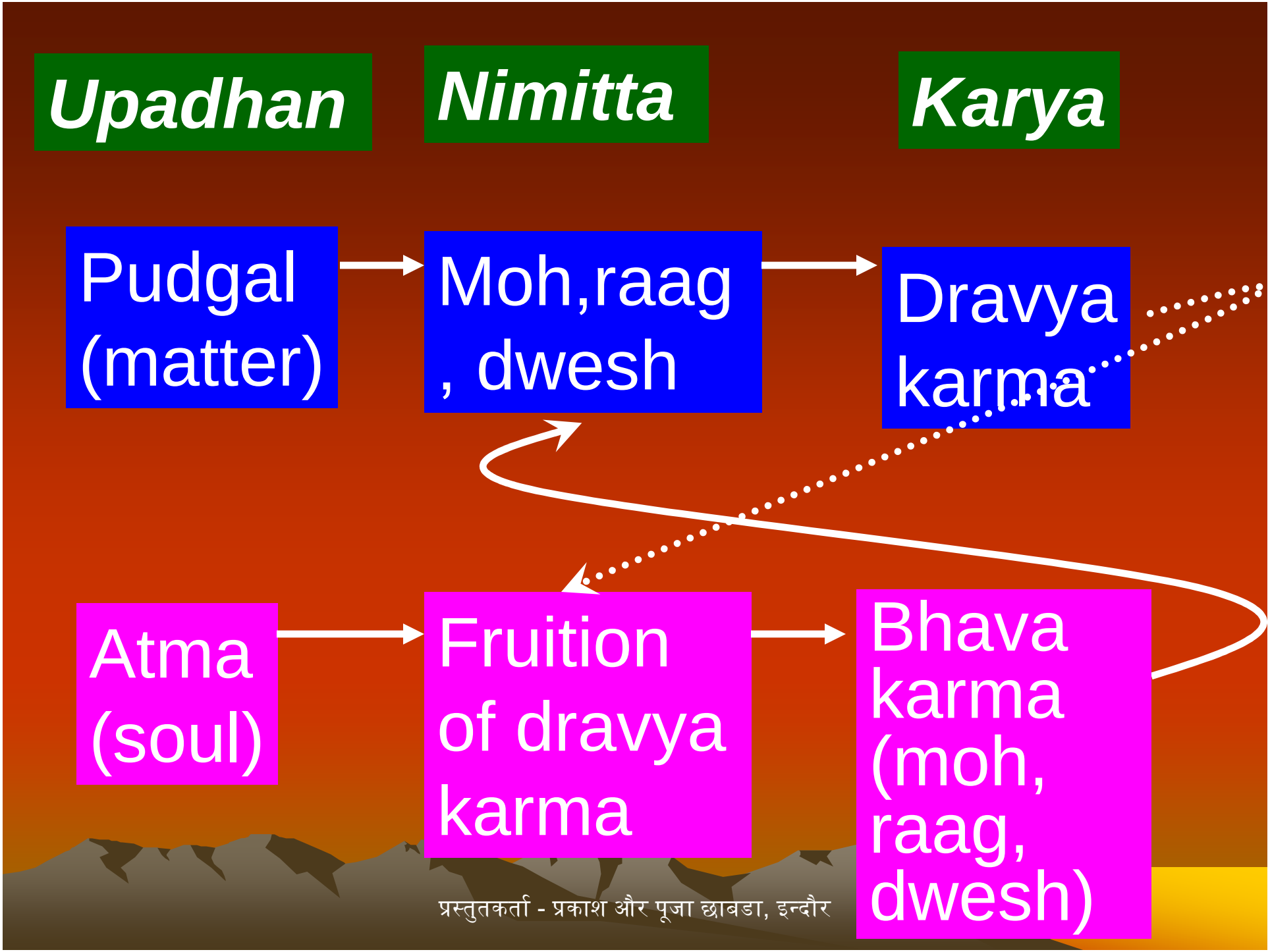
Upadhan
Nimitta
Karya
Pudgal (matter)
Moh,raag , dwesh
Dravya karma
Atma (soul)
Fruition of dravya karma
Bhava karma (moh, raag, dwesh)